नर्गिकतमे भूणनम् ॥ मश्यमाः भिरेया भूगक्षे अधि। भिवालिप्त भ्रिधान भरताम् भरतामनः भक्षित्राहिश्वमः अव्यक्तिमः । भिवालिप्त भ्रिधान भरताम् भरताः भूभण्यक्ति हर्तियः भरताम् अवस्तियः । क्निने ने ने ने विद्याभिइह्या भन्न भने म भन्ने म वि गढ व्य भरिष् इः इ भाभिक्विम् मुद्दे इन इन भुर्भ प्क विभिन्न प्रामित नन नन निर्मा प्रामित नन नन निर्मा भी भी नन नन निर्मा प्रामित निर्मा प्रामित निर्मा निर्मा प्रामित निर्मा निर्मा प्रामित निर्मा निर्मा प्रामित निर्मा प्रामित निर्मा न भ्रियुवन भीवन्य विग्य नमा भूष नेक्षिण नेक्षि भर्नः मेवक्षियः भ भन्षान्यः प्रम्के भगभाग्राम् । भन्ने भाषाम् । भन्ने भाषाम् । शित्रम्भा प्राक्तितम् ॥ ५३: भूतिभागं भद्भ ० रे मभमनुष्य ०० रण्यनुष भीद्वात्व श्रयं क्रविक्तुं व श्रममन्य १०० १ नमाण्येय ०१नीनय ३ मर्भर्नाय ०३ वश्मभ्य क्रियश्चित ग्रमुः॥ मक्षेप्य ० र कत्मिकेय विश्म अस्ति विधु विधु प्रिमिन नपान्य वर्षित्थण्य. ग्रिभेलय त्रासी का अन्ये। शउष्तुः धनुः भच्याः १। १ मध्य वन्य इ इनेभउये 2 8337 ०. श्रम्भवडे

वियाभनवभी इउम्हिम्॥ महेमाभनवर्धा सन्त्रा भारता अस्तर भीइर इक्रचं इक्रेचुक्वना उभिक्तिने उक्रुड्यू भवं भारते भर्य भर्य जनमेर्ने भेष्ण्याने हो युद्धा । उद्दूर्णभाव भेषि मीरण्य अवन्त्र ४ए में चीरभनेवभीकिन भेड़ी मुक्ली अध्यानक के के किथा के यम मुद्रि॥ यसग्भन्नर्थं उद्देश मेल क्रिअडणीः निक्त्रयिक भेग इसथा थे कर्ड भर्ग ॥ मॅर्रमेग्भिनव्धिक्रिकाभः अयक्तिः भनचभक्तियोगभाष्ठि विः भचक्रभमा। मेर्झ मुक्तानवभी अनवभ्रयुग्यि भामभएक येगन भक्र भूष्ट जला हेराडी।नवभीग्राष्ट्रभी विक्र इष्ट्रियग्यूलं: र्यिमणन्त्रभावभाषां उथारणम् ॥ सीराभन्यमी भूजाभावक िएक किक अभिनित्र सक्ष अधिक भिन्न कारियः यशिक्षि योक्रेडम्बक्रयक्राक्त रियम्लक्षालिस्निक्रिक्र भ उभिन्निने के उद्यक्त मी ए भरी भारत रामाण्य भारत करा अमा इग्स्थ्रथानम् ९६॥ घेउमेक्स्थ्रियमोस्स दाक्रास्थ्रथणनेम् ॥

राम-

3

विभयउभभमें उभाभिमें उनक्पूमिण्य भिर्में कर्ष मानुकार ममभाप रणने डाग्कने थर्छन् की सनिविष्ठ मेरे भारतना मोत्रा। गर्भलकाराधन्याभिति॥ एडिङ्का मन्हारिटामि- उउः भन्म भने न्द्रामः॥ उर्यभगा लिक्ट्रामः॥ विर्मेनभाष्यनभूः॥विरंतभः इत्यू म्ह्रे। यव म्यः इत्यू म्ह्रे। विभा न्भः कृष्ये। वियनभः नर्के। विनन्भः प्रक्रि। विभः नभः धर्म्यः॥ विम्मागचरी॥ गमम्मूर्यिक गमठक्र्यणि उत्रिम्भः भूम्मयार्गि।। मुष्य न्भा। क्लान्डियाक विकाजभिन्म् वीर अनुष्टा भिडं भक्ष प्रान्भवी मण नमधारत्यामुकारप्यनि भीडा थाञ्चगडाभरितककरा विक्र विकरण

वैश्या भन् एक्ष्मितियण क्लियान क्षेत्रस्म ॥ निन्द्रन मन्त्रम्भ मण्डियान

4

क्लंकिरीधिनभी।क्रम्मम्म्यम्म्वीभक्षिक्ष्यभस्तीभी भीउँमार्वक निगर्भिक्षेत्रस्वित्रस्वात्रिक्षान्। विद्यारालभयुक्तिक्रायक्ष्यक्षान्यक्षा एउड़ाल एरें कर्के विक्राला कर्म वर्मा डी। वाम हिंभ श्रु अ वर्स कर भान्यक्ष इभिराद्रणः भर्भेरा स्थान सम्प्रिया स्थान स्यान स्थान स लाइव्या द्राभे उर्ध्य में हिनील भी के किन क्रिक भी हरी छाने लभी ॥ सनेकानभेयने धना कर्मिक्षिका अलभिकाभनगभरीहो श्रिकेंगेफ्रज्ञली। इस्मन्भी। श्येत्रीलकाभगभगगीर्वलियनभी रण्नकीलकालथेउँकाष्ट्रभन ध्यार्ष्ट्रम् । भाभित्रलण्डेकुण्यमिल्ने क्रियं कुण्ये मुक्रम् भूकुण्ये । प्रस्ति ॥ प्रस्ति । प्रस्ति ।। माम्मेनभे अविवीधाः रियद्वा हड्डा थक्तिभया मंडे गिदाला स लाडि भिर्या देशिएक भी ॥ मेयानंगिकारांचे मेरिनंनियन्यम क्रिस्तागृह भक्षा मार्मिन्न मार्मिन

विभ

उचामकराभव ॥ उड्यम् ॥ भम्मा मेल्या इं अका कर्गे विक्षित्रम् ग्राम्बर्ग अस्ति अस्ति । विक इटाममेभन्भा॥ अनिपङ्गार्थिरंगिकलाम्भनायक ठक्कार्डिक भचका नीचलाथ शिक्षार ॥ ५६अन्ननी॥ गर्नेणिकणकगवित्रद्रम्यनमित्रभी क्रणक्रक्रोस् स्व क्रःधउचनभः॥ ४८गतः॥ सम्मानग्रभम्गालग्रहान्विषणान्य ग्रमम् नम्स्ट्रिया भुग्येत्रिया ।। तहराम्या । विभिर्धयनभ्रम्भित्वकाभभ्रम्घे मर्यमिष्ट

छन्भाभाय॥ सीभावहवामा। छिठगवस्कूलाविमः स्रम्भाविगराभया प्रमनिक्रिकिष्ठाभियुं लिायभिवेंग्कः॥ मी रंभ्रुवन्म॥ स्ट्रानिविक्र्यःभवेः र्था नक विडे भया उन ये केवया अध्या अंभागता है। निर्मे के केंद्रनम्मिति नमुक्त्रभेष्ठानेपानेवानके प्रेमियाने ॥ मर्मिकियानावाय स्क्रार्ठियुगुम भूरायाधिनमाउँछक्त द्विष्ट्रभूमाविला एन सम्प्रियाकि भ्रम्लेनएन नवाभगिक्रिउण्यमण्डिए वद्गाणिधार्यमा इन्हिन्य विजित्ता भा वणन्यणग्य लिप्युविष्कृतिक्रभभव्तिमधः॥लिपिक्रण्यायक्र ग्रसच्चिद्रसभित्रः ग्रम्मिरिंग्मिरिंभच्छेग्भव्छठे । चूवरःसंप्रक मिथण्यस्याक्षिणि विनर्यननिष्ठिः अत्य निष्यान्यनि लक्ष्मणक्षेत्राहुन्त्रभ भाष्ट्रा अध्यानिक किर्दे नामायकः। माः भ गिर्वे ज्वरं का विदिष्ठिकार्या भएकि है केना अस्य प्राप्टिकिएक गिरो। रेक्निभेवरः भेभाक्षक्षा भिराप्त्रमा किले में किरापस्य किं वर्राभियाः। एक भार्त्भाविभवाण्यमिन भार्त्ना भूया लीव कीने यहा केल यवाकाभ्रभविगमाः। अग्झान्तिनिकामा भवाभिका भिक्ति।

महम्मिस्सिक्यन् अचक् ॥ गल्मेग्रम् व्याप्रण्यिद्वा निविद्य मल भागाः भेजाः कानिस्तियाम् विः ॥ हो प्रमा विक्व विक्वल भनेक समा अल्लायभागिक नुद्राभक्त वेद्यारा ध्याना वित्रभाग्य निकालना भीउया भार्ये अलार्ने देहरानी पेन्स् अनुहार्गुः॥अलार्य प्रच्येश्वर निर्पे स्व भम्भियाचन्यान्यान्याद्याद्याद्यान्यान्यान्याय्याय्याद्यान्याय्या भक्भ विकिप्यमुह्भूर्भवक्रद्ध भिम्प ॥ विनेध्यक्र गुरंड इभविनिध्र लेड वल्डा वनश्चमा ग्राविक्वलगाव्यक्तमाडः।०७।।एउन्यन्ति।प्रमुलन भहि किले दियाः उस्मिन्न कर्माद्रेश्मचक्मकल्प्रमः।१९॥भावत्वेभ भूरे मरमक्सभएगम इहिकाकिभक्तम् भक्षमा विदेश र्शितम् र्थिनयं भूक्ष्रभः ॥ मर्ग्यु उद्गत्भ्यं न् स्मितिभवान्यारा १ भवेभव्याभेण्ड्य सीमक् रूप्यक्षणा प्रमुक्तिम भिष्ठ कुल्लाले थ इक्रीभगाभा । भारता प्रकालापनी कामार्गिश्य मस् माने भारती गुरुयम् अन्ता १मा भयमण्या अस्ति मानान्या अने कि के हर्रानेमच भव्यक्तियारेयान्य ॥ थिर्षणेय्यक्रेन्य् इन्द्रिमिन

राभ•

क्रियेंग्रे॥ थाक्ष्युर्गिभ्रान्ध्र ग्र्यान्य भ्यार्थ। स्युरंगिलापे द्वेके निग इन्स्मिक्षित भक्षभवा द्विजला कि कि कि मनने रणिया कि है है रार्गिविद्युधमध्यम् प्रायववितिलिक्ष्यक्रथ्रभिरंगयुवाः लियित्युव्य कानुभक्तिगानुक्रनिथ क्रवण्यभगान क्षेत्रीन्मयह्वरद्भण्ड ॥ मुक् भनेभभाष्य्यभाग्ययभन्त्रणः पर्यम्भूभप्रमुक्षिविषाउतियः॥ लिश्चानि विमान विमान अक्रिक्त अक्रिक्त में भागिक के भागित के भागिक के भागिक के भागित के भागिक के भागित विविधचक्रम ॥व्छाउँ भक्तिभक्ष्यं भिक्रेनेसऽभक्षम चयुउंभगल्यू के अक्रिमा अध्या ॥ विद्य ध्या प्रति चक्षेत्र माउउराभी एक्टि लक्क्रीक्षा अन्तर्क क्षेत्र विषया । जिल्दा विक्रमान् के लक्कि चरान हमित लक्ष मक्षिलकार लिपिट्र एउ भिक्र ॥ भारत स्वयम् सार भिक्का भागा वसारी वसारी वसारी वसारी वसारी के महिला करा कि महिला किया है। भिक्षित्र भागमान्य भिक्ष मुक्सभी भर्गा भिक्त विश्व मुक्सभी भर्गा भिक्त भाग भिक्त मुक्सभी भर्गा भी भर्गा प्रयम्निकं निक्षान्म्यभिर्णवेत्रः लापन् अनियम्बर्के महास्रोडे या। अक् संत्रकले द्विता भागा अन्या अर्क्षा विदेशया गर्मा विक्रियारिया। मानिक्षे विक्राव अग्रक्षा प्रविष्म भविषम्भन्रीवक उठारिमभ्रमा १एप्रिया झिंड्ड इस्टिन सन्तरान दिभारे रेप्र वाधिसंह क्याि सिर्फ्रिया। सम्वेष्ममभेनेध्यमभो सुर्हेलेळ १ विद्वा र्रारेन्थेरियोर्घस्यार्थेर हरेड क्ल्यार्भा भारत्य भेचम्रान् विनी ।भिष्टिक्मिणभचरवीमननियोदिय। भिवन्स्रीधाउपद्विति नन्माङ्गिलिप्डि अन्दन्यिनम्भङ्गि विद्वध्याविध्यक्ष म्राम्य धिनम् द्रोविभणल्य गिर्ण वर्षे प्रमान्न भूरं उत्त धिउन्न ॥ अर्री में मिरिक्स अर्डे भारत अस्ती कियानी विकास नियानी कियानी विकास नियानी नियानी विकास नियानी विका भच्छेयक्क अव्यक्त । मण्॥

सीएम एडिम्ड्यामेनड्रेनिमी रेंसुरभेवाम्ग्रामनाभीनापनविष्टिःथरानः॥



